बाल पुस्तकें : महत्त्व, चुनाव और उपयोग

— कमलेश चन्द्र जोशी

जब बच्चे इस तरह के परिवेश व सामाजिक पृष्ठभूमि से आते हैं, जहाँ न तो पढ़ने की सामग्री उपलब्ध होती है और न पढ़ने की संस्कृति तो फिर जरूरी हो जाता है कि पढ़ना सीखने के लिए बच्चों के बीच सावधानी से चुनी हुई लिखित सामग्री पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो। कमलेश जोशी ने इस लेख में इसी बात को रेखांकित करते हुए लिखित सामग्री के चुनाव व उसके उपयोग के तरीकों पर कुछ पुस्तकों की बानगी देते हुए अपने अनुभव साझा किए हैं।

बच्चों में साक्षरता से जुड़े कौशलों के विकास के संदर्भ को ध्यान में रखते हुए कक्षा में भाषायी समृद्ध माहौल व बाल साहित्य के उपयोग की चर्चाएँ अकसर होती रहती हैं। इन पुस्तकों को बच्चों के पढ़ने के कौशलों के विकास के साथ उनके संज्ञानात्मक विकास में भी महत्त्वपूर्ण माना जाता रहा है। कक्षा में इनके उपयोग से जहाँ बच्चे एक सार्थक संदर्भ में पढ़ना सीखते हैं। वहीं इन पुस्तकों के साथ जुड़ने से उनकी सोच, कल्पना व तर्क आदि का दायरा भी बढ़ता है। इस आलेख में इस बात की चर्चा की जाएगी कि हम प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों की किताबों का उपयोग कैसे करें।

सर्वप्रथम बच्चों की किताबों के उपयोग के बारे में चर्चा करने से पहले हम अपने प्राथमिक स्कूलों के मौजूदा परिदृश्य को समझने का प्रयास करते हैं। हमारे स्कूलों में अधिकतर बच्चे गरीब परिवारों से तथा विविध भाषायी पृष्ठभूमि से आते हैं। वे स्कूलों में पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी हैं, जिनके घर-परिवेश में न तो पढ़ने और न ही उससे जुड़ी सामग्री का माहौल है। इसके साथ हम यह भी जानते हैं कि अधिकतर प्राथमिक कक्षाओं के बच्चे पाँचवी कक्षा उत्तीर्ण करने के उपरांत भी पढ़ने का स्वस्थ कौशल हासिल नहीं कर पाते। इसकी कई वजह हैं उनमें से एक यह है कि इस पृष्ठभूमि से आये बच्चों के पास उपयुक्त पठन-सामग्री न होना, जबकि पढ़ना सीखने के लिए जरूरी है कि पुस्तकों के साथ खूब अंतःक्रिया करें, उनसे रूबरू हों, उन्हें उपट-पलटकर देखें। ऐसे में प्राथमिक कक्षाओं में बाल पुस्तकों का होना व उनका उपयोग करना बेहद जरूरी हो जाता है। ताकि बच्चे सफल व स्वतंत्र पाठक बनने की दिशा में आगे बढ़ सकें। एक सफल पाठक होने में पढ़कर समझना, समालोचनात्मक नजरिए से पढ़ना, पढ़ने का आनंद लेना, स्वतंत्र पाठक के रूप में विकसित होना आदि बातें महत्त्वपूर्ण हैं। इन बातों को ध्यान में रखकर बाल पुस्तकों के उपयोग की योजना बनाई जानी चाहिए तथा इन बातों की समझ शिक्षकों में भी होनी चाहिए।

बच्चों को पढ़ना सीखने की दृष्टि से बाल पुस्तकों का उपयोग बच्चों की पूर्व प्राथमिक कक्षाओं से किया जा सकता है परंतु बालवाड़ियों में ऐसा एक्सपोजर बच्चों को नहीं मिलता। देश में बच्चों की औपचारिक स्कूली शिक्षा कक्षा एक से ही शुरू होती है। इसके पूर्व बच्चों

को उनके घर में भी छपी पुस्तकों का कोई माहौल नहीं मिल पाता, जो आगे उनके पढ़ना सीखने में मदद कर सकता है। इस कारण कक्षा एक से तो बच्चों को चित्रात्मक पुस्तकों और अच्छी कविता-कहानी के पोस्टरों का माहौल देना ही चाहिए। लेकिन वे कौन-सी पुस्तकें होंगी उनके चुनाव में सावधानी बरतना जरूरी है। हम जानते हैं कि पढ़ना-लिखना सीखने में लिखित सामग्री के साथ अंतःक्रिया पढ़ने के कौशलों के विकास में महती भूमिका निभाती है, लेकिन शर्त यह है कि वह लिखित सामग्री उपयुक्त हो। यदि वह उपयुक्त नहीं है, तो उसका असर विपरीत भी हो सकता है और संभव है वह पुस्तक बच्चों के मन में पढ़ने के प्रति ललक व उत्साह पैदा करने की बजाए हमेशा के लिए खत्म कर दे; क्योंकि उस पुस्तक की अनुपयुक्तता उसके मन में कोई अर्थ निर्माण नहीं होने देती और अर्थहीन कवायद करने में बच्चे की कोई दिलचस्पी नहीं होती। यदि बच्चे बार-बार ऐसी अनुपयुक्त पुस्तकों से टकराएँ, तो हो सकता है कि वे समझ बैठें कि यह हमारे बस की बात नहीं और उनसे वे हमेशा के लिए दूरी बना लें।

अच्छे बाल साहित्य के चुनाव से पहले यह भी देखना होगा कि बाल साहित्य का चुनाव किस तरह के उपयोग के लिए कर रहे हैं। क्या यह वह सामग्री है, जिसे बच्चे को खुद पढ़ना है या वह सामग्री, जिसे बच्चे खुद तो नहीं पढ़ेंगे, बल्कि कोई और उन्हें पढ़कर सुनाएगा। जिस सामग्री को बच्चे खुद उपयोग में लेंगे या खुद पढ़ेंगे, उसके लिए दो तरह की सामग्री देखनी होगी। एक तो उन बच्चों के लिए, जो अभी पढ़ने की आरम्भिक अवस्था में हैं तथा दूसरे वे जो काफी हद तक खुद से पढ़ पाते हैं। यानी सामग्री का चुनाव बच्चों के पठन स्तर के अनुरूप हो। आगे हम चर्चा करेंगे कि इन स्तरों के अनुसार सामग्री का उपयोग हम अलग-अलग बच्चों के लिए कैसे करेंगे?

पहली व दूसरी कक्षाओं में बच्चों को मौखिक रूप से कविता-कहानी सुनाने, उनसे बात करने के साथ पुस्तकों को पढ़कर सुनाना महत्त्वपूर्ण गतिविधियाँ हैं। इसके अंतर्गत बच्चों को पुस्तकें दिखाना, उन्हें पुस्तकों को उलटने-पलटने का मौका देना, किताबों के चित्रों पर बातचीत करना, किताब की कहानी पढ़कर सुनाना, कहानी के आधार पर चित्र बनवाना, किताबों की कविताएँ गाना, आदि गतिविधियाँ बच्चों के साथ की जा सकती हैं। चूंकि हमारे स्कूलों में आने वाले अधिकतर बच्चे पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी हैं और वे हाशियाकृत परिवारों से ही आते हैं। इस कारण उनमें इन गतिविधियों के माध्यम से छपी सामग्री के प्रति ललक, उत्साह व भरोसे को बढ़ाना जरूरी

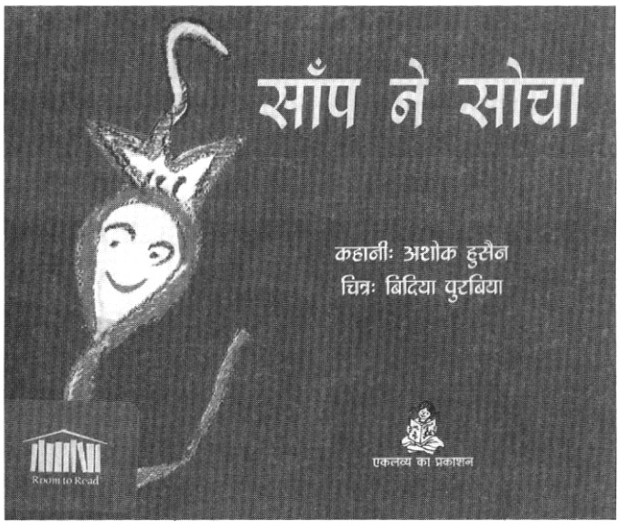

है। इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चे पढ़ना सीखने के आरंभिक व अनिवार्य कौशलों को आसानी से हासिल कर सकते हैं, जैसे कि जो कहानियाँ-कविताएँ हम सुनते हैं उन्हें लिखा भी जा है, किताब कहाँ से शुरू हो रही है हिन्दी में पढ़ना बाएँ से दाएँ और ऊपर से नीचे की ओर होता है, पढ़ने के दौरान चित्रों व लिखे हुए का संबंध होता है आदि। सबसे महत्त्वपूर्ण बात बच्चों को पढ़कर सुनाने की गतिविधि में बच्चे चित्रों को देखने में बहुत गहराई से जुड़ते हैं। सब में आगे आकर चित्रों को देखने की होड़ रहती है कि वे बातचीत के दौरान चित्रों की बारीकियों को देख सकें। ऐसा 'बिल्ली के बच्चे', 'हाथी की हिचकी' 'मिठाई' व 'मैं भी' नामक किताबों को बच्चों को सुनाते हुए आसानी से महसूस किया जा सकता है।

एक शिक्षक को बच्चों के साथ किताबों पर इस तरह से बात करनी चाहिए कि जिससे उनकी समझ को व्यक्त होने का मौका मिले। इसके लिए यह जरूरी है कि उन्हें कहानी में अपने अनुभवों से जोड़ने का मौका दिया जाए, जिससे उनकी समझ विकसित हो। उदाहरण के लिए कक्षा तीन का त्रिकांत अभी पढ़ना सीख रहा है। एक दिन कक्षा में बरखा सीरीज की किताब 'छुपन-छुपाई' पर बात हुई कि तुम भी यह खेल खेलते हो, तो उसने कहा कि छुट्टी के बाद रोज ही खेलते हैं। फिर उसने यह भी बताया कि एक बार खेलने के दौरान वह अपने मकान की छत पर छुप गया और उसे कोई नहीं ढूँढ़ पाया। आगे उसने यह बात भी जोड़ी कि इस किताब में बारी आने की बात कही गई है। इसे हम यहाँ खेल में चोर बनना कहते हैं। इसी तरह किताब में धप्पा कहा गया है। इसे हम टीप कहते हैं।

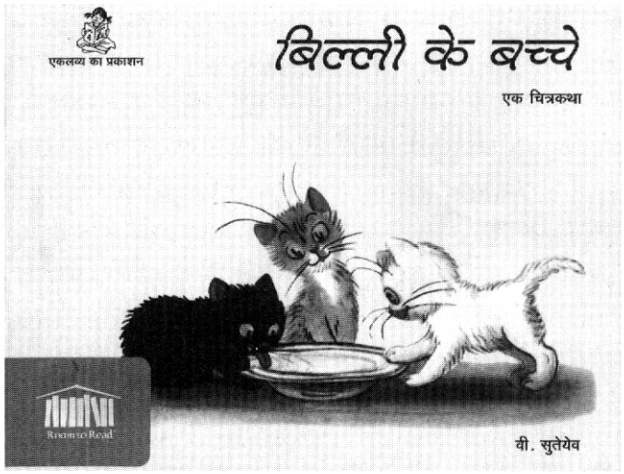

बच्चों के पढ़ने की समझ पर गौर करते हुए इस बात का एहसास हुआ कि बच्चे अपने-अपने ढंग से सोचते हैं। बरखा सीरीज की ही किताब 'मुनमुन और मुन्नू' किताब को पढ़ते हुए जब उनसे पूछा गया कि बिल्ली को दूध क्यों दिया गया? तब त्रिकांत ने कहा कि अंडों को बिल्ली से बचाने के लिए उसे दूध दिया गया, जबकि रोशनी ने कहा कि बिल्ली को भूख लगी थी। यदि उसे दूध नहीं दिया गया तो वह अंडों पर झपट पड़ती। यहाँ यह बात स्पष्ट हुई कि दोनों एक ही बात कह रहे हैं लेकिन अलग-अलग तरह से कह रहे हैं।

एक स्कूल में जब कक्षा 2 के बच्चों से 'हाथी की हिचकी' पर बात करते हुए जब बच्चों से किताब के अंत में पूछा गया कि अब हाथी की छींक कैसे ठीक होगी? तब बच्चे अपने घर के अनुभवों के आधार पर बताते हैं कि हाथी को गर्म पानी की भाप करानी पड़ेगी। जब उनसे पूछा गया कि उसके लिए तो बहुत पानी गर्म करना पड़ेगा? तब उन्होंने बताया कि बड़े पतीले में गर्म करना पड़ेगा, जिसमें शादी में खाना बनता है। दूसरे बच्चे ने कहा कि उसके माथे पर गर्म पट्टी रखनी पड़ेगी। आगे और बच्चों ने कहा उसे दवाई पिलानी पड़ेगी। इन बातों से पता चलता है कि बच्चे इन किताबों को पढ़ते हुए अपने पूर्व अनुभवों का इस्तेमाल करते हैं। यह उनके समझकर पढ़ना सीखने के लिए बहुत जरूरी है। इसी तरह जब बच्चे 'मैं भी' किताब पढ़ते हुए अपने आप जान जाते हैं कि मुर्गी के पैर अलग तरह के होते हैं और बत्तख के अलग तरह के। तभी मुर्गी के बच्चे ने अंत में कहा कि अब मैं तैरने नहीं जाऊँगा। जबकि किताब में यह नहीं दिया गया है। 'बिल्ली के बच्चे' किताब पढ़ते हुए भी बच्चों को बहुत आनंद आता है। इसके अलावा छोटे बच्चे किताब पढ़कर उनके आधार पर चित्र भी बनाते है। चौथी-पाँचवी के बच्चे अपनी पढ़ी हुई किताब का सार लिखने की कोशिश करते हैं। कुल मिलाकर इन सब गतिविधियों पर से बच्चों में स्वतंत्र रूप से पढ़ने-लिखने के कौशलों का विकास होता है। ये सब गतिविधियाँ प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों लिए बहुत जरूरी हैं।

बच्चों को किताबें को पढ़कर सुनाने की गतिविधि में एकलव्य द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में 'बिल्ली के बच्चे', 'नाव चली', 'मैं भी', 'चूहे को मिली पेंसिल', 'रूसी पूसी' रत्ना सागर द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'लालू पीलू' नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'आम की कहानी', 'मेंढक और साँप' स्कॉलास्टिक द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'हाथी की हिचकी', 'मेंढक का नाश्ता' एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित बरखा सीरीज की पुस्तकों का उपयोग किया जा सकता है। इन किताबों को बच्चे पसंद भी करते हैं तथा इनकी कहानी की संरचना व वाक्यों के दोहराव के कारण उन्हें अनुमान लगाने के मौके भी मिलते हैं। इन किताबों में 'हाथी की हिचकी' व बरखा सीरीज की पुस्तक 'मिठाई' का नाम लिया जा सकता है। इनमें दोहराव भी है और बच्चों को सोचने के लिए मौके भी मिलते हैं। इन कहानियों के अंत भी खुले हुए हैं, बच्चे इन पर आगे सोच सकते हैं। 'हाथी की हिचकी' के अंत में हिचकी के बाद हाथी को छींक आने लगती है। यह कहानी बच्चे आगे बढ़ा सकते हैं। इस तरह की अन्य किताबें भी उपयोग में लाई जा सकती हैं।

उक्त कारणों से पहली-दूसरी कक्षाओं के बच्चों को किताब पढ़कर सुनाना एक अनिवार्य गतिविधि लगती है। कक्षा में इन पुस्तकों के उपयोग से बच्चों में छपी सामग्री के प्रति जागरूकता बढ़ती है। वहीं इन पुस्तकों में उनको अनुमान लगाने के मौके मिलते हैं। अक्षर शब्दों की पहचान होती है। उनके लिए अनुभवों की दुनिया खुलती है जिसमें वे अपने अनुभव भी जोड़ सकते हैं। कक्षा में इन सब प्रक्रियाओं के लिए शिक्षक की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। उसे भी इन सब बातों की समझ होनी चाहिए।

बच्चों के साथ काम करते हुए ऐसा अनुभव होता है अगर बच्चों के साथ इस तरह की सामग्री से जुड़ने के अवसर उपलब्ध न हुए हों तो उन्हें समझ में ही नहीं आता कि कहानी कहाँ से शुरू हो रही है। इसके साथ यह भी देखने को मिलता है कि ऐसे बच्चों का किताब पढ़ने के दौरान पूरा फोकस शब्दों पर ही होता है। वे चित्रों को अलग देखते हैं व पाठ्य को अलग। उन्हें इस बात का एहसास ही नहीं होता कि उन्हें चित्रों से पढ़ने में मदद भी मिलती है। इस तरह के उदाहरण प्राथमिक कक्षाओं में देखने को मिलते हैं। एक बार, एक स्कूल में जाना हुआ, वहाँ कक्षा तीन के एक बच्चे ने एक किताब देखनी शुरू

की और उसने शिक्षक से पूछा इसकी कहानी कहाँ से शुरू हो रही है। शिक्षक से बात करने पर पता चला यह बच्चा रोज स्कूल ही नहीं आता है, इस कारण पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया से काफी दूर है। इसी तरह कई बच्चों के पढ़ने के अवलोकन को देखें तो समझ में आता है कि जिन बच्चों का किताबों से वास्ता नहीं बना है, उनका ध्यान केवल लिखित पाठ्य की तरफ ही था। वे चित्रों पर कोई ध्यान ही नहीं दे रहे थे। एक प्राथमिक विद्यालय में रोशनी बरखा सीरीज की 'रानी भी' किताब पढ़ रही थी। किताब पढ़ते हुए उसमें एक वाक्य आया- रानी ने फूलों वाली फ्रॉक पहन ली। वह 'फ्रॉक' शब्द पर अटक रही थी। इस पर जब उसे बताया गया कि लिखे हुए के साथ बने चित्र में रानी ने क्या पहना हुआ है? तब उसने कहा 'फ्रॉक'। इस प्रकार उसे कुछ एहसास हुआ कि लिखित सामग्री व चित्रों का भी एक रिश्ता होता है। इस प्रक्रिया में आगे वह फ्रॉक पढ़कर आगे का वाक्य पढ़ने लगी। इससे लगता है कि शिक्षक के द्वारा, पढ़ने के दौरान चित्रों पर भी बच्चों का ध्यान आकर्षित करवाया जाना चाहिए, जिससे उन्हें पढ़ने के दौरान समझने में मदद मिल सके। इसी तरह किताबों के चित्रों पर बातचीत करने से उन्हें अनुमान लगाने में भी मदद मिलती है। इस प्रकार की प्रक्रियाएँ छोटी कक्षाओं में बहुत जरूरी हैं।

जो बच्चे खुद से किताबें पढ़ने की कोशिश में हैं, उन बच्चों को छोटे समूहों में किताब पढ़ने के मौके देना दूसरी महत्त्वपूर्ण गतिविधि होती है। इसके लिए कक्षा को छोटे समूहों में बाँटा जा सकता है। प्रत्येक समूह में पाँच-छ बच्चे हो सकते हैं और वे आपस में बैठकर किताबें पढ़ सकते हैं। पढ़ते हुए अटकने पर, वे आपस में बात भी कर सकते हैं। शिक्षक से भी पूछ सकते हैं। कक्षा में ऐसा माहौल बनाने का प्रयास शिक्षक को करना चाहिए। यह रणनीति इस नजरिए से भी ठीक लगती है कि हमारे स्कूलों में आने वाले तीसरी, चौथी व पाँचवी के अधिकतर बच्चे प्रवाहपूर्ण ढंग से पढ़ ही नहीं पाते। वे अटक-अटक कर पढ़ते हैं या अभी समझकर नहीं पढ़ पाते। इस प्रक्रिया में जरूरी है कि शिक्षक प्रत्येक समूह में जाएँ और उनकी पढ़ने की प्रक्रिया का अवलोकन करते हुए बच्चों को पढ़ने में सहयोग करें। उनसे किताबों पर बातचीत करें। यहाँ इस बात पर ध्यान देना जरूरी है कि अगर बच्चों को कक्षा में इस तरह के मौके नियमित रूप से दिए जाएँ, तो उनके पढ़ने के स्तर में भी निश्चित रूप से सुधार होता है। इसके लिए कक्षा में विभिन्न तरह की सामग्री का उपयोग किया जा सकता है।

इस स्तर के बच्चे 'बुढ़िया की रोटी' व 'प्यासी मैना' जैसी किताबें बच्चे बहुत पसंद करते हैं। इनके पाठ क्रमबद्धता व दोहराव लिये हुए है जिसमें बच्चों को आनंद आता है। 'हक्का बक्का', 'बतूता का जूता', 'महँगू की टाई' नामक कविता संग्रह भी बच्चों को पढ़ने को दिए जा सकते हैं जिससे बच्चों में कविता पढ़ने में रुचि बनाई जा सकती है। अकबर व बीरबल के किस्सों से अलग 'शहंशाह अखबर को कौन सिखाएगा' नामक किताब एक शासक को अलग रूप में प्रस्तुत करती है। 'ननिहाल में गुजरे दिन', 'रूपा हाथी', पाँच दोस्त', 'दोस्त या दुश्मन', 'छुटकी उल्ली', 'बस की सैर' आदि किताबों को पढ़ने का अपना ही मजा है। इसको बच्चे अपने अनुभवों से जोड़ पाते हैं। इसी तरह 'अम्मा सबकी प्यारी अम्मा' व 'संकट साँप का' जैसी किताबें बच्चों में बच्चों में पशु-पक्षियों के प्रति संवेदनशीलता के भाव को प्रकट करती हैं। इन पर बातचीत की जा सकती है। इन पुस्तकों को पढ़ते हुए जहाँ बच्चे पढ़ना सीख रहे होते हैं, वहीं उनके लिए अनुभवों की दुनिया खुलती है। इसके अंतर्गत वे किताबों में दूसरों के अनुभवों को महसूस कर पाते हैं तथा अपने अनुभवों को जोड़ पाते हैं। इससे उनके सोचने-समझने का दायरा बढ़ता है। उनकी समझ में दूसरे नजरिए भी जुड़ते हैं। यहाँ सबसे जरूरी काम है कि शिक्षक पढ़ने के दौरान उनकी मदद करें। उनसे बातचीत करें जिसमें इस तरह के प्रश्न हों कि तुम्हें कहानी कैसी लगी? इस समस्या का और क्या हल हो सकता है? क्या तुम्हारा भी इस तरह का अनुभव रहा है? अगर तुम इसकी जगह होते तो क्या करते? आदि। इसके साथ चित्रों की सुंदरता का एहसास कराने के लिए चित्रों से जुड़े भी प्रश्न पूछने चाहिए। चित्रों में क्या हो रहा है? कौन से चित्र सुंदर लग रहे हैं? क्यों सुंदर लग रहे हैं? आदि। यहाँ ध्यान देना जरूरी है कि अकसर हम किताबों-कहानियों पर बातचीत करते हुए तथ्यात्मक प्रश्न ही पूछते हैं, जबकि जरूरी है कि उन्हें सोचने व कल्पना करने के प्रश्नों से भी रूबरू करवाया जाए। इसके अलावा इन किताबों पर अपने मन से लिखने व चित्र बनवाने के अभ्यास भी करवाए जा सकते हैं।

प्राथमिक कक्षाओं में बाल पुस्तकों के उपयोग की अगली रणनीति उन पाठकों को ध्यान में रखकर बनाई जा सकती है, जो बच्चे पढ़ तो लेते हैं परंतु उन्हें कुशल पाठक के रूप में विकसित होना है। इसके अंतर्गत पढ़े हुए को समझकर नए प्रश्न सोचना, भाषाई सौंदर्यबोध का एहसास करना, पुस्तक की समस्या को अपने परिवेश से जोड़कर देखना, समस्याओं के नए हल सोचना आदि, काम करवाए जा सकते हैं। इसके लिए कक्षा में उन्हें स्वैच्छिक रूप से पढ़ने के मौके दिए जाने चाहिए, जिससे वे स्वतंत्र पाठक के रूप में विकसित हो सकें। इसके साथ उनसे यह बातचीत भी की जा

सकती है कि उन्हें किताब के कौन से हिस्से अच्छे लगे और क्यों? इन किताबों में एक विविधता होनी चाहिए जैसे 'मुल्ला नसरूद्दीन के किस्से' व 'अकबर बीरबल की कहानियाँ' एक हास्यबोध लिये हुए हैं। उन्हें ये बच्चे मजे के लिए पढ़ सकते हैं। कविताओं के आनंद के लिए 'महके सारी गली-गली' नामक किताब पढ़ने को प्रदान की जा सकती है। 'कजरी गाय' शृंखला की पुस्तकें व 'पिप्पी के लम्बे मोजे' नामक जैसी किताबें बच्चों को आनंद तो प्रदान करती हैं और सोचने का नया नज़रिया भी देती हैं। 'पंचतंत्र की कहानियाँ' व 'जंगल की कहानियाँ' देश की पारंपरिक कहानियों का रस प्रदान करती हैं। इसी तरह से 'पहाड़ जिसे चिड़िया से प्यार हुआ', 'दानी पेड़', 'जिसने उम्मीद के बीज बोए' 'स्वामी और उसके दोस्त', 'भोलू और गोलू' तथा 'बब्बर सिंह और उसके साथी' बच्चों के लिए रोचक भी हैं, और उन्हें अच्छे साहित्य से परिचित भी कराती हैं। 'नकचढ़ी राजकुमारी' और 'व्हीलचेयर ही मेरे पैर हैं' जैसी किताबें विकलांग बच्चों के प्रति संवेदनशीलता तो जगाती ही हैं और विकलांगता के प्रति एक सामाजिक जिम्मेदारी का एहसास भी दिलाती हैं। 'क्यूँ-क्यूँ लड़की' बच्चियों को सवाल पूछने वाले के रूप में प्रस्तुत करती हैं। इसी प्रकार 'जू की कहानी' मध्यम वर्गीय बच्चों में हाशियाकृत बच्चों की भागीदारी का भाव जगाती हैं। इन पर बच्चों के साथ चर्चाएँ आयोजित की जा सकती हैं और स्वतंत्र रूप से लिखने के अभ्यास करवाए जा सकते हैं।

अंत में बच्चों की किताबों के कक्षा में उपयोग के अंतर्गत मूल बात यह समझने की है कि बच्चों को नियमित रूप से किताबों को पढ़ने के मौके दिए जाएँ। उन्हें स्वतन्त्र रूप से किताबों को चुनने व पढ़ने की छूट हो। इन किताबों के साथ बच्चों को अपने परिवेश के अनुभव जोड़ने के मौके मिलें। उनसे शिक्षक बातचीत करें जिससे वे अपने पढ़े हुए का अर्थ एक व्यापक संदर्भ में ग्रहण कर पाएँ। उन्हें अपनी समझ को समृद्ध करने का मौका भी मिले। उनमें अच्छी कहानियों व अच्छे चित्रों की समझ भी विकसित हो सके। कुल मिलाकर यह समझना जरूरी है कि इन किताबों को हम बच्चों में पढ़ने की आदत का विकास और एक अच्छा पाठक विकसित करने के नजरिए से देख रहे हैं। इस नजरिए से इन पुस्तकों के कक्षा में उपयोग की आवश्यकता बढ़ जाती है। इस बात को पूरे शैक्षिक तंत्र को समझना चाहिए तथा अच्छी बालपुस्तकें स्कूलों में अनिवार्य रूप से उपलब्ध करवानी चाहिए। इस पर शिक्षकों की भी तैयारी करवाई जानी चाहिए। उन्हें भी बच्चों की किताबों में रुचि लेना सीखना चाहिए। यहाँ यह बात गौर करने की है कि अगर शिक्षक खुद किताबों में रुचि नहीं लेंगे तो बच्चों के साथ अच्छी तरह काम भी नहीं कर पाएँगे।

इस संबंध में स्टीफन क्रेशन के अध्ययनों को याद करना भी उचित ही रहेगा। उन्होंने अमेरिकी स्कूलों में पढ़ने और समझने की प्रक्रिया को लेकर कई सारे स्कूलों में 1993 से लेकर 2001 तक कई केस अध्ययन किए। इन केस अध्ययनों के दौरान उन्होंने स्कूलों में बच्चों को तीन समूहों में बाँटा। एक समूह में बच्चों के साथ 'सहपठन' पर काम किया था। इस प्रक्रिया में शिक्षक बच्चों के पढ़े हुए पर उनसे नियमित रूप से बात करते थे। दूसरे समूह में सिर्फ बच्चों को नियमित तौर पर पढ़ने की सामग्री ही उपलब्ध कराई गई थी और 'स्वतंत्र व स्वैच्छिक पठन' के तहत काम किया गया। बच्चों से उस पर कोई बात नहीं होती थी। तीसरे समूह को ऐसा कोई एक्सपोजर नहीं दिया गया था। इन समूहों का क्रेशन नियमित अंतराल पर अवलोकन करते रहे। एक साल बाद जब उन्होंने इन समूहों का मूल्यांकन किया, तो पाया कि जिन बच्चों के साथ 'सहपठन' पर काम किया गया, उन बच्चों की पढ़ने, समझने और लिखने की क्षमता का दूसरे अन्य समूहों से बेहतर विकास हुआ। यही नहीं, दूसरे समूह में, जहाँ बच्चों के साथ केवल नियमित तौर पर पढ़ने की सामग्री ही साझा की गई, उनका पुस्तकों को पढ़ने-समझने का स्तर तीसरे समूह से बेहतर पाया गया। क्रेशन ने अपनी इन अध्ययनों के बारे में अपनी पुस्तक 'फ्री वालेंटरी रीडिंग' में विस्तार से लिखा है। इससे हमें काफी अंतर्दृष्टि मिल सकती है।

कमलेश चन्द्र जोशी

कमलेश जोशी विगत 20 वर्षों से प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र से गहरा जुड़ाव बनाए हुए हैं। प्राथमिक शिक्षा से जुड़े विभिन्न पहलुओं, आरंभिक साक्षरता, शिक्षक-शिक्षा, बाल साहित्य व स्कूल पुस्तकालय, आदि में गहरी रुचि रखते हैं। पूर्व में 'प्रारंभिक शैक्षिक संवाद' नामक शैक्षिक पत्रिका का सम्पादन किया है। वर्तमान में अजीम प्रेमजी फाउंडेशन, देहरादून में कार्यरत हैं। सम्पर्क- kamlesh@azimpremjifoundation.org